



हफ्तावार रिसाला : 439
Weekly Booklet : 439

Qootul Quloob Se 59 Madani Phool (Qist-2) (Hindi)

कूतुल कुलूब

से 59 मदनी फूल (क्रिस्त: 2)

(सफ़हात : 16)



जुमुआ के दिन की एक दुआ

05

सिद्दीक़ीन के मर्तबे का हुसूल

11

खामोश रहने की अहमियत

12

दुनियावी स़ाबत का ज़रीआ

14

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“कूतुल कुलूब” से 59 मदनी फूल (क्रिस्त : 2)⁽¹⁾

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला “कूतुल कुलूब से 59 मदनी फूल (क्रिस्त : 2)” पढ़ या सुन ले उसे अपनी फ़रमां बरदारी वाली नेकियों भरी ज़िन्दगी अता फ़रमा और वोह ईमान पर फ़ौत हो कर जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाखिल हो जाए।
اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बार किसी भिकारी ने ग़ैर मुस्लिम से सुवाल किया, उन्होंने ने मज़ाक़न अमीरुल मोमिनीन हज़रते मौला मुशिकल कुशा, अलिय्युल मुर्तज़ा शेर ख़ुदा के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने हाज़िर हो कर सुवाल के लिये हाथ फैलाया, आप رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ने 10 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो। (ग़ैर मुस्लिम हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है!) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो उस में एक दीनार था! येह करामत देख कर कई ग़ैर मुस्लिम मुसलमान हो गए। (राहतुल कुलूब, स. 142)

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़

हाज़तें सब रवा हुई उस की है अज़ब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب ❁❁❁ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

¹ ...येह रिसाला अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब “कूतुल कुलूब जिल्द अब्वल (उर्दू)” से तय्यार किया गया है।

﴿1﴾ बुज़ुर्गाने दिन के वक़्त नमाज़ पढ़ने में रूकूअ व सुजूद की कसरत पसन्द करते और रात की नमाज़ में लम्बा क्रियाम करना पसन्द करते।

(क़तूल कुलूब (उर्दू), 1/ 236)

शैतान के कारनामे

﴿2﴾ शैतान के पास एक सज़़त (सुंघाने वाली कोई चीज़) एक लज़़क़ (चटाने वाली कोई चीज़) और एक ज़रूर (छिड़कने वाली कोई चीज़) है जब वोह बन्दे को सुंघाता है तो उस के अख़्लाक़ बुरे हो जाते हैं, जब चटाता है तो उस की ज़बान बुराई व शर से आलूदा हो जाती है और जब कुछ छिड़कता है तो बन्दा रात भर सोया रहता है यहां तक कि सुब्ह हो जाती है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 90। क़तूल कुलूब (उर्दू), 1/ 237)

﴿3﴾ जो चाहे मांग, मैं तुझे अ़ता करूंगा

بِسْمِ اللَّهِ، مَا شَاءَ اللَّهُ، وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، مَا شَاءَ اللَّهُ، كُلُّ نِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ، مَا شَاءَ اللَّهُ، الْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ، مَا شَاءَ اللَّهُ، لَا يُصِرُّ الشُّوْعُ إِلَّا اللَّهُ

तर्जमा : अल्लाह पाक के नामे मुबारक से, अल्लाह पाक जो चाहे, अल्लाह पाक के बग़ैर नेकी करने की कुव्वत नहीं, अल्लाह पाक जो चाहे, हर नेमत अल्लाह पाक ही की जानिब से है, अल्लाह पाक जो चाहे, हर किस्म की ख़ैर व भलाई अल्लाह पाक के क़ब्ज़ए कुदरत में है, अल्लाह पाक जो चाहे, अल्लाह पाक के सिवा कोई भी बुराई दूर नहीं कर सकता।

जो कोई हमेशा बेदार होते और सोते वक़्त येह कलिमात पढ़ता है अल्लाह पाक की हिफ़ाज़त में होता है और शैतान से महफूज़ रहता है चुनान्चे हदीसे पाक में है : जो कोई येह कलिमात अरफ़े के दिन 100 मरतबा सूरज गुरुब होने से पहले पढ़े अल्लाह पाक उसे अर्श से निदा देता है : तू ने मुझे राज़ी कर दिया है और मेरे ज़िम्माए करम पर तेरी रिज़ा है मुझ से जो चाहे मांग, मैं तुझे अ़ता करूंगा।

(क़तूल कुलूब (उर्दू), 1 / 244)

﴿4﴾ अज़ान और इक्रामत के दरमियानी लम्हात को ग़नीमत जानें कि येह दुआ का बेहतरीन वक़्त है। (क़तूल कुलूब (उर्दू), 1/246)

﴿5﴾ बड़ी नेमत

तमाम मुसलमानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ने एक साइल को अंगूर का एक दाना दिया, रावी फ़रमाते हैं हम एक दूसरे की जानिब देखने लगे तो आप رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ने इश़ाद फ़रमाया तुम्हें क्यूँत अज़्जुब हो रहा है ? इस में बहुत से ज़र्रात हैं। (क़तूल कुलूब (उर्दू), 1/249) हदीसे पाक में है :
 مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلٍ تَبَرَّأَ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ وَلَا يَقْبَلُ اللَّهُ إِلَّا الطَّيِّبَ وَإِنَّ اللَّهَ يَتَقَبَّلُهَا بَيِّنَةً ثُمَّ يُرِيهَا لِصَاحِبِهِ كَمَا يُرِي أَحَدُكُمْ فُلُوهُ حَتَّى تَكُونَ مِثْلَ الْجَبَلِ यानी जिस ने पाकीज़ा कमाई से खज़ूर के बराबर सदक़ा किया और अल्लाह पाक सिर्फ़ पाकीज़ा चीज़ को क़बूल करता है और बेशक अल्लाह पाक उस को अपने दाएं हाथ⁽¹⁾ से क़बूल करता है फिर उस सदक़ा करने वाले के लिये उस को बढ़ाता रहता है जैसा कि कोई श़ाख़्स तुम में से अपने घोड़े के बच्चे को पालता है हत्ता के उस का वोह सदक़ा पहाड़ के बराबर हो जाता है। (بخاری، 476/1، حدیث: 1410)

﴿6﴾ अज़ीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं जिस ने पांचों नमाज़ें बा जमाअत पढ़ीं तो उस ने दो ज़मीनें और दो समुन्दर इबादत से भर दिये। (क़तूल कुलूब (उर्दू), 1/250)

﴿7﴾ अक्ल येह है कि---

रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : अल्लाह पाक की जानिब से हासिल होने वाली अक्ल येह है कि उस के अम्र व नही (जिन के करने

① ... याद रहे ! हदीसे पाक में मज़कूर “दाएं हाथ” से जिस्म वाला दायां हाथ मुराद नहीं बल्कि येह मुतशाबिहात में से है जिस का माना वोही है जो अल्लाह पाक की शायने शान है।

का हुक्म दिया और जिन से मना फ़रमाया) मालूम हो जाएं।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 258 - 2245: تاريخ ابن عساکر 450/18، رقم)

﴿8﴾ क़ब्र में नमाज़ जैसी कैफ़ियत होगी

मन्कूल है कि बन्दे की क़ब्र में वैसी ही इतमीनान व सुकून वाली कैफ़ियत व हालत होगी जो उस की नमाज़ में हुवा करती थी और वोह अपनी इस आराम गाह में वैसी ही राहत पाएगा जैसी हालते नमाज़ में पाया करता था।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 261)

﴿9﴾ बाज़ बुज़ुर्गानि दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ जब कोई सूत तिलावत फ़रमाते और उन का दिल इस में मशगूल न होता (यानी तवज्जोह न होती) तो वोह दोबारा उस सूत को दोहराया करते।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 263)

﴿10﴾ अल्लाह करीम और क़ुरआने करीम

एक बार नमाज़ पढ़ते हुए अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद सादिक़ रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की कैफ़ियत अजीब हो गई यहां तक कि बेहोश हो गए इफ़ाक़े के बाद उन से इस का सबब दरयाफ़्त किया गया तो इरशाद फ़रमाया : मैं बार बार एक ही आयते मुबारका पढ़ रहा था कि अचानक मैं ने वोही आयते मुबारका मुतकल्लिम (यानी अल्लाह पाक) से सुनी तो अल्लाह पाक की कुदरत व हैबत के सामने मेरा जिस्म अपनी जगह क़ाइम न रह सका।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 267)

﴿11﴾ तिलावते क़ुरआन करने वाले के लिये आदाब

क़ुरआने करीम की तिलावत करने वाले को चाहिये कि डरता रहे, जब ऐसी आयाते मुबारका तिलावत करे जिन में वादा, मद्ह, उम्दा औसाफ़ और मुक़र्रबीन के दरजात का ज़िक्र हो तो खुद को इस मक़ाम पर फ़ाइज़ तसव्वुर न करे, न ही खुद को इस क़ाबिल ख़याल करे बल्कि दूसरे मोमिनीन को इस मक़ाम व मरतबा

पर देखे और जब ऐसी आयात की तिलावत करे जिन में लोगों पर नाराज़ी का इज़हार हो, उन की मज़मूम सिफ़ात का तज़्किरा हो और गाफ़िलीन के मक्रामात और गुनाहगारों के हालात बयान किये गए हों तो खुद को इस मक्राम पर समझे और जाने कि वोही इन आयाते मुबारका का मुखातब है। (क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 275 मुल्लतक़तन)

﴿12﴾ हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ का फ़रमाने अ़लीशान है : लोगों में सब से अच्छी आवाज़ से क़ुरआने करीम पढ़ने वाला वोह है कि जब पढ़े तो तुम देखो कि वोह अल्लाह पाक से डर रहा है। (क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 278—1339: حدیث: 130/2, ابن ماجه)।

﴿13﴾ सज़दए तिलावत में येह दुआ कीजिये : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ الْبَاكِيْنَ اِلَيْكَ الْغَاشِعِيْنَ لَكَ۔ (तर्जमा : ऐ अल्लाह पाक ! मुझे अपनी बारगाह में रोने वालों और डरने वालों में से बना दे।)

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 279)

﴿14﴾ हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ से अर्ज़ की गई कि आप ख़त्मे क़ुरआने करीम के वक़्त क्या दुआ करते हैं ? तो आप ने फ़रमाया : “मैं किस चीज़ की दुआ करूँ ? मैं तो अपनी तिलावत (की कोताहियों) से 100 मरतबा इस्तिफ़ार करता हूँ।”

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 294)

﴿15﴾ क़ुरआने करीम की एक मन्ज़िल रोज़ाना पढ़ना बहुत बेहतर है और येह सुन्नत भी है।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 257)

﴿16﴾ जुमुआ के दिन की एक दुआ

رَبِّ اغْفِرْ وَاَرْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَنَّا تَعْلَمُ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ

तर्जमा : ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा,

मेरा हर वोह गुनाह जो तेरे इल्म में है उस से दरगुज़र फ़रमा और तू ही सब से बेहतर रहम फ़रमाने वाला है : (क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 333—4268: حدیث: 170/6, جامع الاصول)

﴿17﴾ अमानत की हिफ़ाज़त

अमानत की हिफ़ाज़त यह है कि उसे छुपाया जाए अगर बिना ज़रूरत उसे ज़ाहिर किया जाए तो येह ख़ियानत होगी क्योंकि अमानत रखवाने वाला येह पसन्द नहीं करता कि उस की अमानत ज़ाहिर कर दी जाए और किसी छुपी चीज़ की हक़ीक़ी हिफ़ाज़त यह है कि उसे (कहीं रख कर) भुला दिया जाए और उस का ज़ाएअ होना येह है कि उस की हिफ़ाज़त की जगहें बकसरत हों। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/369)

﴿18﴾ रोज़ादार को (गाली गलोच के जवाब में) येह कहना जाइज़ है कि “मैं रोज़ादार हूं।” (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/369)

अच्छी बातें

﴿19﴾ अजनबी वोह है जिस का कोई दोस्त न हो। ﴿20﴾ बदगुमानी दोस्त से दूर कर देती है।

﴿21﴾ किसी की इज़्ज़त करना बेहतरीन आदत है। ﴿22﴾ हया हर अच्छे व नेक काम का सबब है।

﴿23﴾ सब से मज़बूत सबब जिस से तुम अपने नफ़्स पर क़ाबू पा सको वोह तअल्लुक है जो तुम्हारे और अल्लाह पाक के दरमियान है।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/ 375 मुल्तक़तन)

﴿24﴾ जो किसी मश्कूक चीज़ (यानी जिस के हलाल व हराम या जाइज़ व नाजाइज़ होने में शक हो उस) से न रुके तो उस ने खुद को नफ़्स की ख़्वाहिश का फ़रमां बरदार कर दिया।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/385)

﴿25﴾ अल्लाह पाक कोई भी अमल बग़ैर उस के सहीह तरीक़े के क़बूल नहीं करता और उस का सहीह तरीक़ा येही है कि उस का इल्म हासिल किया जाए।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1 / 396)

﴿26﴾ अल्लाह पाक क्रियामत के दिन फ़रमाएगा

अल्लाह पाक क्रियामत के दिन फ़रमाएगा : बन्दा तो तू मेरा था लेकिन दोस्त मेरे इलावा दूसरों को बनाता रहा, रिज़्क मेरा खाता रहा मगर अमल दूसरों की रिज़ा के लिये करता रहा।
(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/397)

﴿27﴾ आमाल में मिलावट ना मक्बूल

अगर दूध में गोबर और खून में से कुछ मिल जाए तो दूध जैसी नेमत हमें हासिल न होगी इसी तरह हमारे अमल को ख्वाहिश से पाको साफ़ होना चाहिये ताकि हम अपने वाजिबात व हुक्क अदा कर के अज़्रो सवाब के मुस्तहिक़ हो सकें। चुनान्चे दूध जैसी नेमत में अगर हम गोबर या खून देख लें तो हम उसे छोड़ देते हैं और उसे इस्तिमाल नहीं करते, इसी तरह हकीम व खबीर रब हमारे अमल में जब रियाकारी वगैरा की मिलावट पाता है तो उसे हमारी जानिब लौटा देता है और क़बूल नहीं फ़रमाता।
(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/398)

﴿28﴾ कोई भी इबादत ख्वाहिशे नफ़सानिया से बचे बगैर कामिल नहीं हो सकती।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/404)

﴿29﴾ रात के क्रियाम पर इस्तिक्रामत (यानी पाबन्दी) इख़्तियार करना सब से सख़्त अमल है और औराद को पाबन्दी से अदा करना मोमिनीन का वस्फ़ और आबिदीन (यानी इबादत गुज़ारों) का तरीक़ा है।
(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/412)

﴿30﴾ अल्लाह पाक जिस शख्स को इबादत का आदी बना दे और फिर वोह शख्स सुस्ती की बिना पर उसे तर्क कर दे तो अल्लाह पाक उस पर नाराज़ हो जाता है।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/413 – 763/3، اتحاف السادة المتقين)

﴿31﴾ वक़्त की अहमिय्यत

जिस ने आज के दिन, गुज़रे हुए कल के मुकाबले में अल्लाह पाक की

ज़ियादा नाफ़रमानियां कीं तो वोह महरूम है और जो आज अपने गुज़रे हुए कल से नेकियों में इज़ाफ़ा न करे तो वोह भी नुक्सान में है। (क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/413)

﴿32﴾ किसी आरिफ़ (अल्लाह पाक की पहचान रखने वाले वलियुल्लाह) से मन्कूल है “मुझे आग में दाख़िल कर के आजमाया जाए येह मुझे मासियत (यानी गुनाह) में मुब्तला कर के आजमाए जाने से ज़ियादा पसन्द है।” (क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/415)

﴿33﴾ बाज़ उलमाए किराम ने नफ़्स के लालच को उस मख़वी की मिस्ल क़रार दिया है जो शहद लगी हुई रोटी के पास से गुज़रे और सारा शहद हासिल करने की खातिर उस में गिर जाए और उस के पर शहद से चिपक जाएं जिस के सबब वोह मर जाए। जब कि एक दूसरी मख़वी उसी रोटी के पास से गुज़रे तो शहद के थोड़ा सा क़रीब जाए, अपनी ज़रूरत पूरी करे और सहीह सलामत हालत में पीछे हट जाए।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/418)

﴿34﴾ नफ़्स का मालिक बनने और नफ़्स पर ग़लबा पाने का तरीक़ा

शैख़ अबू तालिब मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जो बन्दा अपने नफ़्स का मालिक बनना चाहता है तो उस के लिये नफ़्स को क़ाबू मे दे दिया जाता है और बिल आख़िर वोह इस पर ग़ालिब आ जाता है लिहाज़ा अगर अपने नफ़्स का मालिक बनना चाहते हैं तो पहले इस पर सख़्ती करें अगर इस तरह आप ने उस पर ग़लबा हासिल करने की कोशिश की तो यक़ीनन उस पर ग़ालिब आ जाएंगे और अगर उस पर सख़्ती न की तो वोह आप पर ग़ालिब आ जाएगा, उस का हर तरफ़ से मुहासबा करें क्यूंकि अगर आप ने उसे न रोका तो येह आप को भी अपने साथ ही बहा ले जाएगा।

नफ़्स पर क़ाबू पाने का सब से पहला मरहला येह है कि हर लम्हा उस की कड़ी निगरानी करें और दिल में पैदा होने वाले हर ख़याल पर अमल करने के बजाए

पहले कुछ ठहरें और सोचें कि अगर येह खयाल अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये हो तो फ़ौरन अमल कर गुज़रें और अगर वोह खयाल अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये न हो तो फ़ौरन उसे दिल से निकाल दें ताकि वोह पक्का न होने पाए।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 422)

﴿35﴾ मुसलमानों के चौथे खलीफ़ा, हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رضي الله عنه से मरवी है कि हर वोह दिन जिस में अल्लाह पाक की ना फ़रमानी न की जाए वोह हमारे लिये ईद का दिन है।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 423)

﴿36﴾ नाराज़ी की अ़लामत

उलमाए किराम फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक की नाराज़ी की अ़लामत येह है कि बन्दा दूसरों के उयूब बयान करता रहे और अपने उयूब को भूल जाए और गुमान रखे कि अल्लाह पाक लोगों पर नाराज़ है और येह यक़ीन रखे कि अल्लाह पाक उस से महब्बत करने वाला है।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/ 426)

﴿37﴾ लगातार गुनाहों में मुब्तला रहने के अस्बाब येह उमूर हैं : तर्के मुहासबा (यानी अपने आमाल का जाइज़ा न लेना), तौबा में ताखीर, इस्तिक़ामत में टाल मटोल और अल्लाह पाक की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार न करना।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1 / 427)

﴿38﴾ गुनाहों की ह़द

हज़रते सय्यिदुना हसन رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक और बन्दे के दरमियान गुनाहों के सामने एक ह़द मुक़र्रर कर दी गई है चुनान्चे बन्दा जब उस ह़द तक पहुंचता है तो उस के दिल पर मोहर लगा दी जाती है और फिर कभी भी उसे ख़ैर व भलाई की तौफ़ीक़ नहीं दी जाती। पस ऐ हुदूद से तजावुज़ कर जाने वाले इन्सान !

तौबा में जल्दी कर और इस हद तक पहुंचने से पहले पहले फ़ौरन वापस लौट आ, वरना थकावट और मशक्कत का सामना करना पड़ेगा। (क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/429)

﴿39﴾ बन्दा किसी भी लम्हा ख्वाह वोह मुख्तसर ही हो दो हालतों से खाली नहीं हो सकता, यानी या तो मक्कामे नेमत में होगा या फिर मक्काम मुसीबत में। पस मक्काम नेमत में बन्दे पर शुक्र करना और आजमाइश के मौक़अ पर सब्र करना लाज़िम है।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/435)

﴿40﴾ वक़्त की तक्सीम

आक़िल पर लाज़िम है कि अपने औकात चार हिस्सों में तक्सीम कर ले :

﴿1﴾ एक साअत में अपने रब से मुनाजात करे। ﴿2﴾ एक साअत में अपने नफ़्स का मुहासबा करे। ﴿3﴾ एक साअत को अल्लाह पाक की पैदा कर्दा काइनात में ग़ौरो फ़िक्र के लिये ख़ास कर दे। ﴿4﴾ एक साअत को खाने पीने जैसी ज़रूरिय्यात के लिये ख़ाली रखे क्यूंकि इसी साअत में उसे बाक़ी औकात में उमूर सर अन्जाम देने के लिये मदद हासिल होगी।

(क़तुल कुलूब (उर्दू), 1/437)

﴿41﴾ दुनिया में फ़िक्रे आख़िरत

दुनियावी मुशाहदे के चार मक्कामात हैं और हर बन्दा अपने हाल के लिहाज़ से अपने मक्कामो मरतबे के मुताबिक़ इस का मुशाहदा करता है : बाज़ इब्रत व बसीरत की निगाह से दुनिया देखते हैं येह उलुल अल्बाब (यानी अक़ल वाले) हैं जिन के कुलूब से हिजाब उठा दिये जाते हैं और येही वोह लोग हैं जो हाथ और आंखें रखने वाले और मक्कामे इब्रत पर फ़ाइज़ हैं। येह मक्काम उन उलमाए किराम का है जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस हैं। बाज़ दुनिया और दुनिया वालों को रहमत व हिकमत की निगाह से देखते हैं, येह डरने वालों का मक्काम है। बाज़

शहवत व रश्क की आंख से देखते हैं, येह हलाक होने वालों का मक़ाम है और इस से मुराद वोह दुनियादार लोग हैं जो सिर्फ़ दुनिया कमाने की जुस्तजू में मगन रहते हैं और इस के न मिलने पर हसरत का शिकार हो जाते हैं। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/437)

﴿42﴾ सिद्दीक़ीन के मर्तबे का हुसूल

हज़रते अबू मुहम्मद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे कि बन्दा सिद्दीक़ीन (औलियाए किराम के सब से आला मक़ाम) के मर्तबे तक हक़ीक़त में उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि उस में येह चार चीज़ें न पाई जाएं: (1) सुन्नत के मुताबिक़ फ़राइज़ की अदाएंगी, (2) परहेज़गारी व तक्वा के एतिबार से हलाल खाना, (3) ज़ाहिरो बातिन में मना किये हुए कामों से बचना और (4) मरने तक इसी हालत पर सब्रो इस्तिक्रामत से क़ाइम रहना। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/442)

﴿43﴾ अमल की कोई इन्तिहा नहीं

हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे कि अल्लाह पाक की क़सम ! मौत के इलावा बन्दे के किसी अमल की कोई इन्तिहा नहीं और अल्लाह पाक की क़सम ! मोमिन वोह नहीं जो सिर्फ़ कोई अमल महीना व दो महीने या साल व दो साल तक करे बल्कि मोमिन तो हमेशा अल्लाह पाक के हुक्म पर क़ाइम रहता है और अल्लाह पाक की ख़ुफ़िया तदबीर (यानी छुपे फ़ैसले) से डरता रहता है।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/442)

﴿44﴾ कंकर के ज़रीए ख़ामोश रहना सीखा

बुज़ुर्ग़ि दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ में से एक बुज़ुर्ग़ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक कंकर के ज़रीए ख़ामोश रहना सीखा, जिसे मैं ने अपने मुंह में 30 साल तक डाले रखा जब भी कोई बात करने का इरादा करता तो उस से मेरी ज़बान में लुक्नत आ जाती और मैं ख़ामोश हो जाता।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/461)

﴿45﴾ फ़ुज़ूल बात के बदले दो रकअत नमाज़

एक बुज़र्ग़ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने नफ़्स से अहद किया कि मेरे मुंह से जो भी ला यानी (यानी फ़ुज़ूल) बात निकलेगी मैं उस के बदले दो रकअत नमाज़ अदा करूंगा, लेकिन येह काम मुझ पर आसान रहा, फिर मैं ने खुद पर हर कलिमे के बदले एक रोज़ा रखना लाज़िम ठहरा लिया, येह भी मुझे आसान मालूम हुवा लेकिन मैं रुका नहीं यहां तक कि मैं ने अपने नफ़्स पर हर कलिमे के इवज़ एक दिरहम सदक़ा करना लाज़िम कर लिया तो येह काम नफ़्स पर मुश्किल बन गया और आखिरेकार में ला यानी (यानी फ़ुज़ूल) बात करने से रुक ही गया। (क़ुतुल कुलूब (उर्दू), 1/461)

﴿46﴾ एक आरिफ़ का क़ौल है कि इल्म की दो किस्में कर दी गई हैं : निस्फ़ इल्म ख़ामोश रहना है और निस्फ़ इल्म इस बात का जानना है कि इस इल्म को कहां रखा (यानी बयान किया) जाए। (क़ुतुल कुलूब (उर्दू), 1/464)

﴿47﴾ हज़रते सय्यिदुना आमश رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाया करते कि बाज़ बातें ऐसी होती हैं जिन का जवाब ख़ामोशी ही है। (क़ुतुल कुलूब (उर्दू), 1/465)

﴿48﴾ ला अद्री बोलें अद्री नहीं

उलमाए किराम फ़रमाते हैं : येह जुम्ला सीख लें : ला अद्री (यानी मैं नहीं जानता) और येह जुम्ला हरगिज़ न सीखें : अद्री (यानी मैं जानता हूं), अगर आप ने ला अद्री (यानी मैं नहीं जानता) कहा तो लोग आप को सिखाएंगे यहां तक कि आप जानने लगेंगे और अगर आप ने अद्री कहा तो वोह आप से सुवाल करेंगे यहां तक कि आप इस सुवाल का जवाब न जानते होंगे। (क़ुतुल कुलूब (उर्दू), 1/466)

﴿49﴾ ख़ामोश रहने की अहमिय्यत

मन्कूल है कि जिस तरह कलाम करना सीखते हो इसी तरह ख़ामोश रहना भी सीखा करो क्यूंकि अगर कलाम तुम्हारी रहनुमाई करेगा तो ख़ामोशी तुम्हें

बचाएगी चुनान्चे खामोश रहने से दो बातें हासिल होती हैं। ﴿1﴾ खामोशी से उस शाख्स की जहालत दूर कर सकते हो जो तुम से भी बड़ा जाहिल हो ﴿2﴾ और खामोशी के ज़रीए उस शाख्स से इल्म हासिल कर सकते हो जो तुम से भी बड़ा आलिम हो। (वज़ाहत : यानी आप खामोश रहें और उन को बोलने देंगे तो इस से भी आप के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।) (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/466)

﴿50﴾ गुफ़्तगू में तक़््वा

बाज़ औक्रात मुफ़ीद गुफ़्तगू करने वाला भी बे मौक़अ गुफ़्तगू करने की वजह से शर्मसार हो जाता है। उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि बन्दे का तक़््वा उस की गुफ़्तगू में नज़र आता है। जब कलाम कम होता है तो दुरुस्ती ज़ियादा हो जाती है और कई बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से मरवी है कि सलामती के दस हिस्सों में सो नौ हिस्से खामोशी में हैं। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/467 मुलतक़तन)

﴿51﴾ तीन क्रिस्म के आमाल नामे

मन्कूल है कि मुंह से निकली हुई हर बात के लिये तीन क्रिस्म के आमाल नामे खोले जाएंगे : ﴿1﴾ पहला आमाल नामा होगा येह बात क्यूं की ? ﴿2﴾ दूसरा होगा कि उस पर अमल कैसे किया और ﴿3﴾ तीसरा होगा कि येह बात किस के लिये कही ? अगर वोह उन तीनों आमाल नामों के सुवालात से नजात पा गया तो दुरुस्त, वरना हिसाबो किताब की खातिर उस का ठहरना तवील हो जाएगा। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/468)

﴿52﴾ मोमिन व मुनाफ़िक़् की ज़बान

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मोमिन की ज़बान उस के दिल के पीछे होती है, जब भी वोह कोई बात करने का इरादा करता है तो सोचता है अगर उस के हक़ में हो तो बोलता है और अगर मुखालिफ़ हो तो रुक

जाता है जब कि मुनाफ़िक़ का दिल उस की ज़बान के किनारे पर होता है, यानी दिल में जो ख़याल पैदा होता है बोल देता है, लम्हा भर तवक्कुफ़ नहीं करता बल्कि इस बात से वापस भी नहीं पलटता। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/468)

﴿53﴾ फ़ुज़ूल बातों से रुकने वाले के लिये ख़ुश ख़बरी

कलाम में बनावटी बनाव सिंघार और ज़ियादती होती है जब कि ख़ामोशी में सलामती और ग़नीमत है। चुनान्चे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मवाइज़े हसना में है : “उस शख्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे उस का ऐब लोगों के उयूब से गाफ़िल कर दे और वोह अपने फ़ाल्तू माल को ख़र्च कर दे और फ़ुज़ूल बातों से रुका रहे।”

(الفردوس بماثور الخطاب، 2/447، حدیث: 3929) – (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/469)

﴿54﴾ ख़ल्वत की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत

ख़ल्वत (यानी तन्हाई में रहना) नफ़्स की दुनियावी लज़्जतों में सोचने समझने की सलाहिय्यतों को कम कर देती है क्यूंकि नफ़्स का आंखों के ज़रीए दुनिया का मुशाहदा करना ख़त्म हो जाता है। इस लिये कि आंख दिल का दरवाज़ा है जिस से आफ़ात दाख़िल होती हैं और यहीं शहवतें और लज़्जतें पाई जाती हैं, ख़ल्वत फ़िक़रे आख़िरत पैदा करती है। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/469)

﴿55﴾ दुनियावी रग़बत का ज़रीआ

पेट भर कर खाना दुनियावी रग़बत का ज़रीआ है चुनान्चे बाज़ सहाबए किराम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्कूल है कि शहंशाहे ख़ुश ख़िसाल عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के बाद सब से पहली बिदअत पेट भर कर खाना खाने की पैदा हुई क्यूंकि जब लोगों के पेट भर जाते हैं तो उन की शहवतें भी बे लगाम हो जाती हैं। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/471)

﴿56﴾ मुसलमानों की प्यारी अम्मीजान हज़रते बीबी आइशा सिदीका رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا से मरवी है कि रसूले बे मिसाल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ बग़ैर किसी मजबूरी के यानी अपने इख़्तियार व मर्ज़ी से भूके रहते थे।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/ 471)

﴿57﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि “जब से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ को शहीद किया गया है मैं ने पेट भर कर खाना नहीं खाया।”

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/ 471)

﴿58﴾ अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाया करते : “अल्लाह पाक की क्रसम ! मैं ने ऐसे लोगों को भी पाया जो शिकम सैर हो कर नहीं खाते थे बल्कि उन में से अगर कोई कुछ खाता भी तो सिर्फ़ इस क़दर कि जब जान में जान आती तो फ़ौरन खाने से रुक जाता। मज़ीद फ़रमाते हैं कि मोमिन कभी पेट भर कर नहीं खाता बल्कि उस की वसियत हमेशा उस के पहलू तले रहती है। (यानी वोह मौत को याद करते रहते हैं)”

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/ 472)

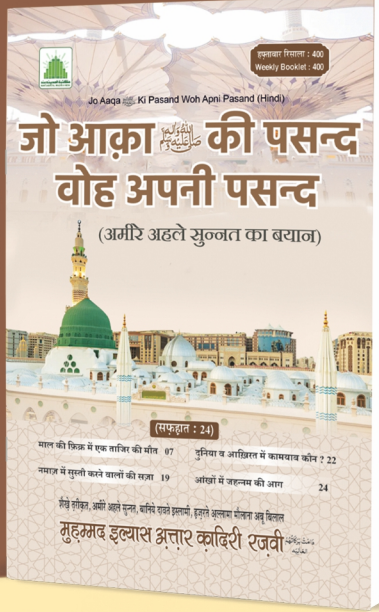
﴿59﴾ हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से मरवी है कि दो बातें क़सावते क़ल्बी (यानी दिल की सख़्ती) का बाइस हैं : बहुत ज़ियादा पेट भर कर खाना और बहुत ज़ियादा बातें करना।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/ 473)

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
शैतान के कारनामे	02	गुनाहों की हद	09
जो चाहे मांग, मैं तुझे अ़ता करूंगा	02	वक़्त की तक्सीम	10
बड़ी नेमत	03	दुनिया में फ़िक़रे आख़िरत	10
अक़ल येह है कि ---	03	सिद्दीक़ीन के मरतबे का हुसूल	11
क़ब्र में नमाज़ जैसी कैफ़ियत होगी	04	अमल की कोई इन्तिहा नहीं	11
अल्लाह करीम और क़ुरआने करीम	04	कंकर के ज़रीए ख़ामोश रहना सीखा	11
तिलावते क़ुरआन करने वाले के लिये आदाब	04	फ़ुज़ूल बात के बदले दो रक़अत नमाज़	12
जुमुअ़ा के दिन की एक दुआ	05	ला अद्री बोलें अद्री नहीं	12
अमानत की हिफ़ाज़त	06	ख़ामोश रहने की अहमिय्यत	12
अच्छी बातें	06	गुफ़्तगू में तक्वा	13
अल्लाह पाक क्रियामत के दिन फ़रमाएगा	07	तीन क्रिस्म के आमाल नामे	13
आमाल में मिलावट ना मक्बूल	07	मोमिन व मुनाफ़िक़ की ज़बान	13
वक़्त की अहमिय्यत	07	ख़ल्वत की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत	14
नाराज़ी की अ़लामत	09	दुनियावी राबत का ज़रीअ़ा	14

अगले हफ्ते का रिसाला



DAWAE ISLAMI
INDIA

FGN
Dekhte Rahiye



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,

Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi

Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,

Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar

Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099



www.maktabatulmadina.in



feedbackmmhind@gmail.com



For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025